'अकबर काल में सांस्कृतिक समन्वय'

सोलहवीं सदी में अकबर ने जिस मुगल साम्राज्य की स्थापना की वह गैर संकीर्णतावादी विचारधारा (non-sectarian ideology) पर आधारित था। उदारता के इस वातावरण में हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों के बीच काफी तत्वों का आदान-प्रदान एवं समावेशन हुआ। समावेशन की इस प्रक्रिया के फलस्वरूप अकबर काल में एक नवीन समन्वित संस्कृति का विकास हुआ।

इस सांस्कृतिक समन्वय के लिये पृष्ठभूमि तैयार करने में निम्न तत्वों का योगदान रहा है—

(i) साम्राज्य विस्तार, जिसके कारण भारत में विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियों को आपस में मिलने का मौका मिला।

(ii) अकबर की धार्मिक नीति - सुलह कुल की नीति

(iii) वैवाहिक सम्बन्ध - राजपूत कन्याओं से

(iv) प्रशासन में हिन्दुओं की भागीदारी - नियुक्ति का आधार योग्यता को बनाया गया (धर्म के स्थान पर) जिससे हिन्दुओं को उच्च पद प्राप्त हुये।

उपरोक्त तत्वों ने सामाजिक एवं धार्मिक समावेशन का ऐसा वातावरण तैयार किया जिससे सांस्कृतिक समन्वय का मार्ग प्रशस्त हुआ।

सांस्कृतिक समन्वय का सबसे ज्यादा प्रभाव स्थापत्य के क्षेत्र में दिखता है। यद्यपि भारतीय स्थापत्य शैली और इस्लामी स्थापत्य शैली के बीच समन्वय सल्तनत काल में ही आरंभ हो चुका था परंतु अकबर के समय इसमें नये ईरानी तत्वों का समावेश हुआ। मुगल नये आकार के गुम्बद

मीनार तथा मेहराबों को ईरान से भारत आये एवं भारतीय शैली की विशेषताओं जैसे स्तंभों का उपयोग, दीवारों पर नक्काशी, समतल छतों का निर्माण, जालियां एवं छतरियों के साथ मिलाकर एक नवीन समन्वित शैली का विकास किया। इस समन्वित शैली का सबसे सुन्दर उदाहरण फतेहपुर सीकरी स्थित भवनों में पाया जाता है विशेष रूप से जोधाबाई के महल, मरियम सुल्ताना एवं राजा बीरबल के आवास गृह, दीवान-ए-खास और शेख सलीम चिश्ती की दरगाह में। दूसरी ओर इसी शैली के प्रभाव में आगरा के किले का जहाँगीरी महल की दीवार अत्यधिक अलंकृत है और उस पर भारतीय अलंकार शैली के स्पष्ट प्रभाव है। अकबर के काल में भवनों का निर्माण व्यापक रूप से हुआ। राजधानी आगरा और फतेहपुर सीकरी के अतिरिक्त लाहौर, इलाहाबाद, अटक, हैदराबाद तथा अजमेर में भी कई भवनों का निर्माण हुआ। इस काल की अन्तिम उल्लेखनीय उपलब्धि आगरा के समीप सिकन्दरा में स्थित अकबर का मकबरा है। मकबरे की पिरामिड जैसी संरचना में वस्तुतः बौद्ध वास्तुशिल्प का प्रभाव झलकता है। इसके भीतरी भाग के अलंकरण में मुस्लिम इस्लामिक, हिन्दू एवं ईसाई प्रभाव देखने को मिलता है। यहाँ ईश्वर के निन्यानवे नाम के साथ 'अल्लाहु अकबर और जल्ला जलालुहु के साथ ही हिन्दू स्वस्तिक एवं मसीही क्रास भी अंकित है जो अकबर के सकलवादी धार्मिक दृष्टिकोण को दर्शाते है।

अकबर के काल में सांस्कृतिक समन्वय का प्रभाव चित्रकला के क्षेत्र में भी देखी जा सकती है। इस क्षेत्र में भी ईरानी एवं भारतीय शैलियों का समावेश हुआ। ईरानी चित्रकला एवं भारतीय चित्रकला एक दूसरे से बहुत भिन्न थी।

भारत में अधिकतर धार्मिक विषयों का चित्रण होता था जबकि ईरान में अधार्मिक और मुख्यतः शासक वर्ग के जीवन का चित्रण होता था। अकबर ने ईरानी परम्परा के विषयों को चुना किन्तु प्रस्तुतिकरण की शैली पूर्णरूपेण भारतीय थी। इसप्रकार अकबर के शासनकाल में एक ऐसी चित्रकला शैली का विकास हुआ जिसकी आत्मा ईरानी थी एवं शरीर भारतीय था। अकबर ने अपने दरबार में बड़ी संख्या में चित्रकारों को इकट्ठा किया और चित्र बनाने के लिए अलग चित्रशाला स्थापित की। बसावन एवं दसवन्त नाम के प्रसिद्ध चित्रकार अकबर के शासनकाल की अनेक उत्कृष्ट कलाकृतियों के निर्माता थे।

संगीत के क्षेत्र में भी अकबर के दरबार में ईरानी एवं भारतीय परम्परा का समावेशन हुआ। वैसे तो सल्तनत काल से ही भारतीय एवं ईरानी संगीत का आपसी सम्पर्क एवं एक दूसरे पर प्रभाव देखने को मिलता है किन्तु इसका प्रभाव सूफी संतों तक ही सीमित था। शासक वर्ग के स्तर पर दिल्ली के सुल्तानों ने संगीत को अधिक प्रश्रय एवं प्रोत्साहन नहीं दिया। अकबर ने संगीत को दरबारी शिष्टाचार का अभिन्न अंग बनाया और दरबारी संगीतज्ञों की नियुक्ति की। उसके दरबार में अनेक विख्यात संगीतज्ञ थे जिनकी सूची आईने अकबरी में उपलब्ध है, जिसमें सबसे प्रसिद्ध नाम तानसेन का है। यह माना जाता है कि अमीर खुसरो द्वारा ईरानी और भारतीय संगीत के समन्वय का जो प्रयास आरंभ हुआ था वह तानसेन के साथ पूरा हुआ और नई राग रागनियाँ प्रचलित हुई जो न तो पूर्णतः ईरानी थी और न पूर्णतः भारतीय।

साहित्य के क्षेत्र में भी अकबर के शासन काल का विशेष महत्व है। इस काल में भारत में फारसी भाषा और साहित्य का अत्यधिक विकास हुआ। यहाँ तक कि भारत की फारसी

Scanned with CamScanner

रचनायें ईरान की फारसी रचनाओं से अधिक उत्कृष्ट स्तर पर पहुँच गयी। अकबर ने ही दरबारी इतिहास लेखन की परम्परा को भारत में स्थापित किया। अबुल फजल उसके दरबार का प्रसिद्ध इतिहासकार था जिसकी रचनायें अकबरनामा और आईनेअकबरी अकबर के इतिहास पर मानक ग्रंथ हैं। निजामुद्दीन की तबकाते अकबरी तथा बदायूनी की मुन्तखबुत्तवारीख भी इस काल की दो अन्य ऐतिहासिक रचनायें हैं। काव्य के क्षेत्र में फैजी का नाम उल्लेखनीय है। इस तरह गद्य एवं पद्य दोनों ही क्षेत्रों में उल्लेखनीय रचनायें इस काल में मिलती हैं। दूसरी ओर अकबर ने संस्कृत और अन्य भाषाओं से फारसी में अनुवादित ग्रंथों को भी तैयार कराया जिसमें सबसे प्रसिद्ध रचना फैजी द्वारा भगवद्गीता का अनुवाद और बदायूंनी द्वारा रामायण का अनुवाद है। विज्ञान एवं अन्य विषयों पर भी संस्कृत की रचनाओं का फारसी में अनुवाद हुआ। दूसरी ओर तुर्की भाषा में लिखी बाबर की आत्मकथा 'तुजुके बाबरी' का फारसी में अनुवाद 'बाबरनामा' शीर्षक से अब्दुल रहीम खानेखाना ने किया।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य के दृष्टिकोण से भी अकबर का शासनकाल उल्लेखनीय रहा। इसी काल में तुलसीदास की विश्व जगत प्रसिद्ध रचना रामचरितमानस लिखी गई। यद्यपि तुलसीदास का अकबर के दरबार से कोई सम्बन्ध नहीं था फिर भी अकबर के शासनकाल की उदार परम्पराओं ने हिन्दी भाषा के विकास का उपयुक्त वातावरण बनाया। अकबर के दरबार में भी हिन्दी के कुछ कवियों को हम पाते हैं इनमें एक महत्वपूर्ण नाम अब्दुलरहीम खानखाना का है जिनके दोहे आज भी हिन्दी भाषा में विशिष्ट स्थान रखते हैं

इस तरह हम देखते हैं कि अकबर का शासनकाल

Scanned with CamScanner

संस्कृति के समन्वय का काल था। अकबर ने एकीकरण की ऐसी नीति अपनायी जिसके फलस्वरूप हिन्दू एवं मुसलमानों के बीच एक समन्वित परंपरा का विकास हुआ जिसे कुछ विद्वान गंगा-जमनी संस्कृति कहते हैं।

By
Dhirendra Kuman Singh
Guest Faculty
Dept. of History
R.N. College, Hajipur

Scanned with CamScanner